ठुमरी एवं दादरा में सौन्दर्य तत्त्व

गीतांजली शर्मा'

भूमिका

यदि कोई गीत प्रकार सदियों से या लम्बे समय से श्रोताओं एवं रसिकों द्वारा पसन्द किया जाता हो और अपना अस्तित्व बनाए रखता हो और निश्चित हो तो वह गीत लोगों को आकर्षित करने वाला होता है। यद्यपि आज के संदर्भ में हमें ध्रुपद, धमार जैसी शैलियों के भी बहुत कम दर्शन होते हैं। जाति गायन, प्रबन्ध गायन इत्यादि तो लुप्त हो गये हैं क्योंकि वो लोगों को अधिक समय तक आकर्षित नहीं कर पाये। तथापि ठुमरी एवं दादरा शैली के विषय में हम यह कह सकते हैं कि ठुमरी/दादरा अपने रसीलेपन के कारण तथा अपनी शृंगारिक प्रकृति के आकर्षण में ओत-प्रोत, जन मानस की रसिकता को आवाहित अपनी प्रकृति के कारण आज भी अपना स्थान बनाए हुए है।

ठुमरी एवं दादरा की क्या विशेषताएँ हैं? भावनिर्माण के लिए ठुमरी में किन बातों पर ध्यान दिया जाता है? ठुमरी का सबसे उच्च स्थान कहाँ होता है? ठुमरी/दादरा का सौन्दर्य निश्चित रूप से कहाँ होता है? यह सब बिन्दु विवेचन के अन्तर्गत आते हैं। इन सब बिन्दुओं को ठुमरी के सौन्दर्य तत्व के माध्यम से समेटने का प्रयत्न है। जैसा कि इस अध्याय में प्रारम्भ में राग, ताल एवं काव्य को अलग-अलग वर्णित किया जा चुका है फिर भी संक्षेप में इन बिन्दुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

[1] संगीत मकरंद, नारद श्लोक संख्या- 48

' शोधकर्ता हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला ।

ठुमरी में काव्य, काव्य–विषय और उसकी सूचकता को अधिक महत्त्व दिया जाता है। हर एक मानव में स्थाई रूप से रहने वाला शृंगार भाव त्था उसका आकर्षक प्रकटीकरण ठुमरी में विशेष रूप से दिखाई देता है। स्त्री के प्राकृतिक भाव, स्त्री के दृष्टिकोण से व्यक्त करते समय निसर्ग दत कोमल, नाजुक, स्निग्ध, मधुर, भावदर्शी और लचीली आवाज़ हो तो ठुमरी गायन भावपूर्ण हो जाता है। शब्दों का उच्चारण करते समय कुछ विशेषता हो तो केवल शब्दों के हेर–फेर से, आवाज़ में अपने आप होने वाले ऊँचे–नीचे पन से अक्षरों पर होने वाले आघात से आवाज़ में सहायता प्राप्त होती है। छोटी मुरकियों, खटकों के अलावा दर्द पुकार, कण और मींड अलंकारों से ठुमरी की रसपूर्णता बढ़ जाती है। ठुमरी के मूल काव्य में हाँ, हाय, हाय राम, अब, हर, अरे आदि सम्बोधन शब्द जोड़ दिए जाते हैं और परिणाम कारकता बढ़ायी जाती है। ठुमरी में राग नियमों का पालन महत्त्वपूर्ण नहीं होता, परन्तु काव्यगत आशय विविध स्वर समूहों से, विभिन्न छटाओं के साथ प्रकट करने का खास प्रयत्न किया जाता है।

इन सारी बातों के लिए स्वर, ताल और आवाज़ पर पूरा काबू होना आवश्यक है। सुर से बोल और बात पैदा होनी चाहिए। ठुमरी मूलतः नृत्य गीत है, ओर गीत को अपने अभिनय से जीवित करना यही नृत्य है। इस दृष्टि से नृत्य भी एक गीत प्रकार है। पर नृत्य केवल शरीर, हाथ, पाँव के कलापूर्ण चलन पर आधारित है जिसमें भावदर्शन नहीं रहता। श्शकथकश्श के साथ गाई जाने वाली ठुमरी में, बंदिश की और बोल–बाँट की ठुमरी होती थी। कुछ गायकों का ऐसा विश्वास था कि बिना नृत्य की सहायता से केवल गायन से भी निष्पत्ति और भावनिर्माण हो सकता है। लखनवी उस्तादों का कहना था कि ठुमरी गाते समय मन में निरत (नृत) का भाव होना चाहिए।

आदर्श ठुमरी साधारणत: उन्हीं तत्वों पर निर्भर करती है जिन पर प्रत्येक क्रमबद्ध संगीत शैली आधारित होती है। प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार आदर्श ठुमरी गायन में निम्न तत्वों का होना आवश्यक है। मधुर कण्ठ, सुन्दरभाव, क्रम, कविता, अलंकार और अनुपात। इसी प्रकार आदर्श ठुमरी के लिए भी कुछ उपकरण आवश्यक होते हैं जिन्हें मोटे तौर से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है, (अ) मुख्य और (ब) गौण। मुख्य वर्ग के अन्तर्गत तीन चीज़े आती हैं, (1) कविता, (2) टेकनीक और (3) गायकी।

1. **कविता**–जैसा कि पहले कई बार कहा जा चुका है कि ठुमरी संगीत की वह शैली है, जिसमें गीत की कविता के भावों को अभिव्यक्त किया जाता है, इसी कारण इसमें गीत के शब्द बहुत अधिक महत्त्व रखते हैं। वे समुचित रूप से भाव में पूर्ण हों, गाने योग्य हों और उनकी कविता दोषहीन हो। कविता की स्थायी और अंतरा एक–दूसरे से मेल खाते हों। दूसरे, शब्दों का उच्चारण ठीक–ठीक और स्पष्ट रूप से किया जाना चाहिए। तृतीय, गीत में मुख्य एवं गौण शब्द सावधानी से चुने जाने चाहिए और उचित अनुपात में उनके बोल भाव विकसित किए जाने चाहिए। ख्याल में वादी और सम्वादी स्वर पहले से ही निश्चित होते हैं, ठुमरी में मुख्य और गौण शब्द कवि की ओर से तो निश्चित रहते हैं, परन्तु उनका स्पष्टीकरण गायक करता है। श्श्यदि ये सब उचित रूप से न चुने जाएँ तो भय इस बात का होता है कि अनुचित शब्दों का प्रसार हो जाये और अर्थ का अनर्थ हो जाए।श्श[1]

[1] श्रीमती लीला कारवल, ठुमरी परिचय, पृष्ठ– 43

2. **टेकनीक**–यह प्रत्येक प्रकार से उचित होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

(अ) ख्याल की टेकनीक ठुमरी की टेकनीक से भिन्न है, अतः ख्याल के लम्बे उलझे हुये आलापों और तानों का प्रयोग न होना चाहिए। ठुमरी में स्वरों के विभन्न प्रकार के ऐसे जोड़ होते हैं जिनमें यत्र–तत्र दूसरे रागों की छायाएँ आती हैं, अतः छोटे आलाप–तान, मींड, सूत, कण, खटका, मुर्की और खुनकी तथा स्वर का उतार–चढ़ाव, ये सब बुद्धिमता पूर्वक प्रयोग किये जाने चाहिये।

(ब) इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता नहीं है कि ठुमरी गाते समय ऐसे रागों की छाया दिखाई जाये जिनके स्वर ठुमरी के मूल राग से मेल खाते हों तथा उनका प्रयोग इस प्रकार से हो कि ठुमरी के राग का व्यक्तित्व खण्डित न हो।

(स) ठुमरी के विभिन्न भाग ऐसेढंग से गाये जाने चाहिए कि प्रत्येक भाग की तुलनात्मक महत्वता प्रकट हो।

(द) पूरा गाना शिष्टतापूर्ण व नैसर्गिक ढंग का होना चाहिए। सब प्रकार के मुद्रा दोषों से रहित होना चाहिए। केवल ऐसी मुद्राएँ प्रयोग में लायी जा सकती हैं जो स्वरों के उतार–चढ़ाव, खिंचाव, झटकों इत्यादि को सरल ढंग से दर्शाने में सहायक हो।

3. **गायकी**–यहाँ गायक की योग्यता इस बात में होती है कि वह मुख्य रूप से इसके भावों को प्रकट कर सके। गायक की यह क्षमता अंशतः

जन्मजात होती है और अंशतः शिक्षा और अभ्यास पर आधारित होती है। सामान्यतः इसका कार्य सम्पादन तीन चीज़ों पर निर्भर होता है, (अ) कल्पनाशीलता मस्तिष्क, (ब) भावुक हृदय और (स) मधुर कण्ठ। कल्पनाशील मस्तिष्क भावों को अनुभव करने तथा उसको साकार रूप देने के लिए आवश्यक है। प्रत्येक ठुमरी में एक विशेष भाव होता है जिसमें कई गौण भावों का मनन किया जाता है और तब उसको प्रकट करने के लिए उचित राग चुना जाता है। ठुमरी की टेकनीक भले ही ठीक हो और आवाज़ भले ही सुन्दर हो, परन्तु यदि उसके पीछे एक भावपूर्ण हृदय न हो तेा वह एक निर्जीव संगीत प्रतीत होगा। मधुर कण्ठ सफल ठुमरी गायन के लिए बहुत आवश्यक है। श्श्जरे कण्ठ बिन रागश् एक प्रसद्धि कहावत है। मस्तिष्क और हृदय के साथ मधुर आवाज़ सोने में सुहागे का काम करती है, और यह गीत की शोभा बढ़ा देती है।श्श[2]

उपसंहार

बोल से बात पैदा करने का अर्थ तरह–तरह के बोलों को गाने के प्रकार से है। यह कला गायक की कल्पना शक्ति पर आधारित रहती है। बोल से सौन्दर्य निर्माण करना, स्वर समूहों की विविधता, शब्दों से अनेक अर्थ एवं छटाएँ पैदा करना इत्यादि सब का इकट्ठा प्रयोग ठुमरी के सौन्दर्य उत्पादन के मूल तत्व हैं। लोकगीतों की तर्ज़ों में रहने वाला खास ग्रामीण ढंग के प्रभाव का होना भी सौन्दर्य को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त ख्याल अंग की ठुमरी में शब्द को फैंकने के अतिरिक्त तथा बोल बनाने के साथ केवल स्वरों के प्रयोग से तथा आवाज़ के ऊँचे–नीचेपन से ठुमरी में दर्द का आभास पैदा कर ठुमरी को सजाया जाता है। इसी प्रकार पंजाब अंग की ठुमरी में पटियाला घराने के मुख्य अंग जुड़ जाने से

[2] श्रीमती लीला कारवल, ठुमरी परिचय, पृष्ठ– 44

इसका सौन्दर्य निराला हो जाता है। लचीली आवाज़, फिरतदार तानों का प्रयोग, तीन सप्तकों में स्वर लगाना तथा वहाँ की लोकधुनों का मिश्रण एक अलग सा आनन्द प्रदान करते हैं, हालांकि पंजाब के गुणीजीव पूरब अंग को ही अपना मूल मानते हैं।